अत्याचारी शासन का अंत करने में सक्षम आंदोलन के लक्षणों की सूची

The Checklist for Ending Tyranny

Peter Ackerman and Hardy Merriman

From the book: 'Is Authoritarianism Staging a Comeback?'
Editors: Mathew Burrows and Maria J. Stephan
The Atlantic Council, Washington, D.C. - 2015
Translation: Madhu Bala Joshi, September 2018 (Evaluated by Ramesh Sharma)

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman

अत्याचारी शासन का अंत करने में सक्षम आंदोलन के लक्षणों की सूची

डैनियल एकरमैन और हार्डी मैरिमैन

आज संसार में सबसे भयंकर संघर्ष राज्यों के बीच नहीं बल्कि उन के अंदर, अत्याचारी शासकों और उस जनता के बीच चल रहे हैं जिस का वे दमन करते हैं। व्यापक रूप से माना जाता है कि दमित जनता के पास दो विकल्प हैं : इस आशा में अत्याचार झेलते रहना कि वह कुछ उदार हो जाएगा, या फिर स्वतंत्रता पाने के लिये हिंसक विद्रोह करना। लेकिन अक्सर हो रहे नागरिक प्रतिरोध अभियान, जिन्हें कभी—कभी अहिंसक संघर्ष या 'जन शक्ति' आंदोलन कहा जाता है, इस सीमित दृष्टिकोण को खारिज करते हैं। यह अभियान जितना अनुमानित है उस से कहीं अधिक संख्या में होते रहे हैं। 1900 से अब तक, औसत रूप से हर बरस ही एक बड़ा नागरिक प्रतिरोध अभियान किसी सत्तासीन शासक को चुनौती देता रहा है।[1] 1972 से, अधिकांश भू-राजनीतिक रुप से महत्वपूर्ण संघर्षों और लोकतांत्रिक बदलावों के परिणाम नागरिकों की अगुवाई में चल रहे इन्हीं आंदोलनों से परिभाषित होने लगे हैं।[2] फिर भी नीतिनिर्माता, विद्वान, पत्रकार और दूसरे पर्यवेक्षक, अत्याचारी शासन को कमज़ोर करने और हिंसा के बिना अधिकार प्राप्त करने की आम लोगों की क्षमता को लगातार कमतर आंकते रहे हैं।

विश्लेषणात्मक सीमित अंधत्व

2011 में ट्यूनिशिया और मिस्र में और हाल ही में 2014 में यूक्रेन में हुए विद्रोह ज़मीनी स्तर पर नागरिक प्रतिरोध के अपनी शक्ति और परिवर्तन की संभावना से आश्चर्यचकित कर देने के उदाहरण हैं। किसी ने भी इन विद्रोहों की आहट नहीं सुनी लेकिन यह कोई अनोखी बात भी नहीं; शायद ही किसी ने सर्बिया (2000), जार्जिया (2003) और यूक्रेन (2004) की विभिन्न "रंग क्रांतियों" के होने की बात सोची हो। उससे पहले के दशकों में कोई भी अनुमान नहीं लगा पाया कि संगठित अहिंसक प्रतिरोध, फ़िलिपिनो तानाशाह फ़र्डिनेंड मार्कोस (1986), चिली के तानाशाह अगस्तो पिनोशेत (1988), पोलैंड में सोवियत शासन (1989) या दक्षिण अफ्रीका(1992) के रंगभेदी शासन के पतन में एक निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

इन संघर्षों और ऐसे ही दूसरे संघर्षों की व्याख्या करना अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय विशेषज्ञों के लिए कठिन होता है। वे अक्सर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि नागरिक प्रतिरोध के सफल मामले किसी नियत समय में किसी नियत देश की विशिष्ट परिस्थितियों के परिणामस्वरूप घटी ऐतिहासिक विसंगतियाँ हैं। इन प्रतिरोधों की गतिशीलता को किसी खास मामले के संदर्भ में देखा जाता है और इसलिये उन्हें अपने उत्पीड़कों के खिलाफ़ ताकत दिखाने की, जनता की एक सामान्य रणनीति का साक्ष्य नहीं माना जाता। बहरहाल, दुनिया के तानाशाह इस सीमित अंधत्व से ग्रस्त नहीं हैं। वे जनशक्ति आंदोलनों को अपने शासनों के लिए सबसे बड़े खतरे के रुप में पहचानने लगे हैं।

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

पिछले दशक में तेजी से बढ़ती अहिंसक संधर्ष की घटनाओं को देखते हुए लोकतांत्रिक परिवर्तन का समर्थन करनेवाले लोगों के लिए जनशक्ति आंदोलनों की सफलता की अपनी समझदारी को बढ़ाना बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। अहिंसक संघर्ष कई मामलों में कारगर रहता है क्योंकि यह दो मूलभूत वास्तविकताओं का लाभ उठाता हैः पहला, निरंकुश शासन उस जनता की प्रचलित आज्ञाकारिता पर निर्भर होता है जिसका दमन वह नियंत्रण बनाए रखने के लिए करता है; और दूसरा, ऐसे शासन में हर कोई समान रुप से वफादार नहीं होता।

नागरिक प्रतिरोध कैसे कार्य करता है

इन दो वास्तविकताओं के आधार पर, नागरिक प्रतिरोध करनेवाले जनता को व्यवस्थित रुप से अपनी आज्ञाकारिता को न निभाने और हड़तालों, बहिष्कारों, सामूहिक प्रदर्शनों और अन्य कार्यवाहियों के माध्यम से अहिंसक दबाव बनाकर दमनकारी व्यवस्था को बाधित करने के साथ–साथ अधिकार, स्वतंत्रता और न्याय प्राप्त करने के लिये एकजुट करते हैं। नागरिक प्रतिरोध में जनता के विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ने पर नागरिक प्रतिरोध करनेवा लों का दमन, अक्सर शांति बहाल करने के लिए अपर्याप्त होता है और इससे दांव उल्टा पड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

बाधक कार्य जारी रहने पर सरकार और राज्य के लिए महत्वपूर्ण अन्य संस्थानों (जैसे पुलिस, सेना, मीडिया और राजनैतिक, नौकरशाही और आर्थिक संस्थाओं) में भी दरारें दिखने लगती हैं। इन दरारों का परिणाम अक्सर पाला बदलना होता है और पाला बदलने की घटनाएं बढ़ने पर निरंकुश शासन का मर्म रही क्षमताएं, भौतिक संसाधनों पर नियंत्रण, मानव संसाधन, लोगों के कौशल और ज्ञान, सूचना का वातावरण और प्रतिबंध लगाने की क्षमता-क्षीण होने लगती हैं। उनके आदेशों का निष्पादन करने के लिये अनुपालकों की कार्यशील श्रृंखला नहीं रह जाती। अंततः अत्याचारी शासकों के पास विकल्प नहीं रह जाते और निरंतर बनाए रखे गए अहिंसक दबावों के कारण वे जबरन अपने पद से हटा दिये जाते हैं। अक्सर इसका परिणाम व्यापक बदलाव होते हैं।

कौशल बनाम स्थितियाँ

नागरिक प्रतिरोध की घटनाओं और प्रभाव के बढ़ने के साथ, इसके परिणामों को प्रभावित करनेवाले कारकों की पड़ताल करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या संघर्ष की शुरुआत से पहले की परिस्थितियां निर्धारित करती हैं कि आंदोलन जीतेगा या निरंकुश शासन? या फिर दोनों पक्षों के रणनीतिक चुनाव और संधर्ष चलाने में उनकी कुशलता जीत निर्धारित करती है?

इंटरनेशनल सैंटर आन नानवायलैंट कनफ़्लिक्ट (जिसका हम एक हिस्सा हैं) के मिशन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह बताना है कि आंदोलन की राह या उसके परिणामों को तय करने में कौशल स्थितियों से अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। हिंसा के इस्तेमाल की विरोधी की इच्छा को महत्वपूर्ण मानते हुए अक्सर इस बिंदु की अनदेखी कर दी जाती है। अक्सर सुना जाता है कि ”अहिंसक प्रतिरोध सौम्य प्रतिद्वंद्वियों के साथ ही कारगर रहता है” लेकिन

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman
दक्षिण अफ्रीका में रंगभेदी शासन, चिली में पिनोशेत, फिलिपींस में मार्कोस या पोलैंड में कम्युनिस्ट शासन की हार को भुला दिया जाता है। अभी हाल के उदाहरणों में मिस्र के होस्नी मुबारक और ट्यूनीशिया के बेन अली शामिल हैं। इन में से किसी के भी शासन को हल्का, सौम्य या गंभीर दमन के उपयोग का अनिच्छुक नहीं कहा जा सकता।

यह गुणात्मक उदाहरण परिमाणात्मक विश्लेषण पर आधारित हैं। 2008 में फ्रीडम हाउस नाम के संगठन ने 1975 - 2006 के बीच निरंकुश शासनों से नई व्यवस्था की दिशा में हो रहे बदलावों के 64 मामलों के संदर्भ में विभिन्न संरचनात्मक कारकों और नागरिक प्रतिरोध पर उनके प्रभाव की पड़ताल के बारे में एक शोध अध्ययन जारी किया। इसके प्रमुख निष्कर्षों का सारांश प्रस्तुत है:

इस अध्ययन में जिन राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों की पड़ताल की गई है, नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों की सफलता या विफलता पर उनका कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय प्रभाव नहीं दिखा। नागरिक प्रतिरोध आंदोलन विकसित, समृद्ध समाजों में भी सफल हो सकते हैं और कम विकसित, आर्थिक रुप से गरीब देशों में भी। अध्ययन में जातीय या धार्मिक ध्रुवीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव सशक्त नागरिक विरोध के उद्भव की संभावनाओं पर पड़ने का कोई महत्वपूर्ण साक्ष्य नहीं पाया गया। व्यापक समर्थन प्राप्त करने की नागरिक आंदोलनों की क्षमता पर इस बात का भी कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं दिखता कि शासनव्यवस्था किस किस्म की है।[3]

इस अध्ययन में जिन राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों की पड़ताल की गई है, उनमें से नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों के उद्भव और परिणामों पर सांख्यिकीय रुप से महत्वपूर्ण प्रभाव डालनेवाला एकमात्र कारक है सरकार का केंद्रित होना।

अध्ययन बताता है कि अधिक केंद्रीकरण से शासन के प्राधिकार को चुनौती देने में समर्थ एक मज़बूत नागरिक आंदोलन के उद्भव की संभावना बढ़ती है। इसका विपरीत भी सही होता दिखता है: सरकार का विकेंद्रीकरण अधिक होगा तो नागरिकों को लामबंद करने के सफल आंदोलन के उभरने की कम ही संभावना होगी।[4]

इस तरह, जहां अध्ययन नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों के प्रक्षेपपथ को प्रभावित करनेवाली एक पर्यावरणीय स्थिति का पता लगाता है, उनके सारे निष्कर्ष स्थितियों के इन संघर्षों के परिणाम की निर्धारक होने के दावे को कमज़ोर बनाते हैं।

तीन साल बाद, 2011 में प्रकाशित अपनी पुरस्कृत किताब *व्हाय सिविल रैज़िस्टैंस वर्क्स: द स्ट्रैटेजिक लाजिक आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट* में एरिका चेनोवेथ और मारिया स्टीफ़न ने 1900 से 2006[5] के बीच चले सत्तासीन सरकारों को चुनौती देनेवाले 323 हिंसक और अहिंसक अभियानों का विश्लेषण किया। उनके अभूतपूर्व निष्कर्ष बताते हैं कि इनमें से 53 प्रतिशत अहिंसक अभियान और 26 प्रतिशत हिंसक अभियान सफल रहे।[6] उन्होंने पाया कि राज्य द्वारा दमन और अन्य संरचनात्मक कारक नागरिक प्रतिरोध आंदोलन की सफलता की संभावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं लेकिन यह प्रभाविता अक्सर जितना समझा जाता है उस से कम ही होती है- राज्य द्वारा हिंसक दमन के मामले में सफलता की दर में कुल 35 प्रतिशत कमी आती है। उन्हें
This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

ऐसी कोई संरचनात्मक स्थिति नहीं मिल पाई जो आंदोलन के परिणामों की निर्धारक हो।[7] आंकड़ों का अच्छी तरह मूल्यांकन करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचती हैं कि “साक्ष्यों के अनुसार नागरिक प्रतिरोध अक्सर उन परिस्थितियों में भी सफल होते हैं जिन्हें बहुत से लोग अहिंसक अभियानों की असफलता से जोड़ते हैं।”[8]
मों की निर्धारक हो।[7] आंकड़ों का अच्छी तरह मूल्यांकन करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचती हैं कि

यह परिणाम उन गलत पूर्ववक्तव्यों को रेखांकित करते हैं जो नागरिक प्रतिरोध के पारंपरिक ज्ञान का आधार हैं। इन संघर्षों के परिणाम निर्धारित करने में कौशल और रणनीतिक विकल्प अक्सर स्थितियों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। और यह आश्चर्य की बात नहीं है, याद कीजिये कि निरंकुशता के विरोधियों का पहला रणनीति-आधारित फैसला लड़ने के तरीके के बारे में होता है। यह अपेक्षा रखना उचित ही है कि अगर परिणाम निर्धारित करने में बाहरी परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण होतीं तो अत्याचार को चुनौती देनेवाले लोगों के लड़ने के तरीके के रणनीतिक चुनाव का कोई महत्व नहीं रह जाता और एक लंबी समय अवधि में और कई मामलों में, हिंसक और अहिंसक संघर्षों की सफलता दर एक सी रहनी चाहिये थी।

लेकिन आंकड़े कुछ और ही कहते हैं। 1900-2006 के बीच जनशक्ति आंदोलनों की सफलता दर दोगुनी रही है और हाल ही के मामलों के अध्ययन बताते हैं कि सफलता दरों में अंतर महत्वपूर्ण रुप से नहीं बदला है।[9] कुछ लोग इसका विरोध करते हुए कह सकते हैं कि नागरिक प्रतिरोध करनेवालों ने आसान लड़ाइयां चुनीं, लेकिन चेनोवेथ और स्टीफ़न ने पहले ही इस तर्क का अनुमान लगा लिया था और वे दिखाती हैं कि ”-----अहिंसक अभियानों में से बहुसंख्य अभियान ऐसे निरंकुश शासनों में उभरे हैं-------जहाँ सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध के परिणाम भी घातक हो सकते थे।”[10]

50 वर्ष पूर्व *सिविलियन रैज़िस्टैंस ऐज़ ए नेशनल डिफैंस: नानवायलैंट एक्शन अगेंस्ट अग्रैशन* में नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री थामस शेलिंग ने एक निबंध लिखा था जिसका निष्कर्ष हैः

तानाशाह और उसकी प्रजा की स्थिति कुछ हद तक एक सी ही होती है। अगर प्रजा तानाशाह और उसकी व्यवस्था से सहयोग न करने के लिये अनुशासित रूप से संगठित हो तो वह उसकी इच्छाएं पूरी करने से इनकार कर सकती है । तानाशाह प्रजा को जो उसे चाहिए वह देने से इनकार कर सकता है - यह काम वह अपनी ताकत से कर सकता है। यह सौदेबाजी की ऐसी स्थिति है जिसमें कोई भी पक्ष, अगर वह पर्याप्त रुप से अनुशासित और संगठित है, तो दूसरे पक्ष को जो चाहिये उसमें से ज़्यादातर चीजों से वंचित रख सकता है; देखना यह है कि जीतता कौन है।[11]

शेलिंग कहते हैं कि नागरिक प्रतिरोध के हिमायतियों द्वारा चुनी गई रणनीतियों की लागतें और लाभ होते हैं, लागतें और लाभ उनके निरंकुश विरोधी की रणनीतियों के भी होते हैं। इन लागतों और लाभों को अपने पक्ष के हित में अधिक कुशलता से वितरित करनेवाला पक्ष विजेता होता है। कुशल निरंकुश शासक को आज्ञाकारिता लागू करनी होती है, अक्सर हिंसा के माध्यम से, और वह अधिकतम आज्ञाकारिता पाने के लिए हिंसा का उपयोग करना चाहता है। जीत इस बात से तय होती है कि किस पक्ष के लोग पाला बदलेंगे और आज्ञाकारिता घटेगी या बढ़ेगी।

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman

लक्षणों की सूची या चैकलिस्ट

कौशल और रणनीतिक चुनाव नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों के परिणामों को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। हमें सफलता के आम कारकों-साझा क्षमताओं, कौशलों और बहुत से विविध आंदोलनों द्वारा चुने गए विकल्पों-की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए। किसी आंदोलन के कई पक्षों का विश्लेषण किया जा सकता है, लेकिन बहुत से चर कारकों को छानने के बाद हम पाते हैं कि सफल नागरिक विरोधों की तीन प्रमुख क्षमताएं हैं:

1. **लोगों को एकजुट करने की योग्यता**
2. **परिचालन योजना**
3. **अहिंसक अनुशासन**

किसी नागरिक प्रतिरोध आंदोलन की यह क्षमताएं आंदोलन की सफलता को ज़बर्दस्त ढंग से प्रभावित करनेवाले तीन शक्तिशाली रुझानों के प्रकट होने के लिए ज़मीन तैयार करती हैं। यह रुझान हैं:

1. **नागरिक प्रतिरोध में नागरिकों की बढ़ती भागीदारी**
2. **दमन का प्रभाव कमज़ोर पड़ते जाना और उस का उल्टा असर बढ़ना**
3. **आंदोलन-विरोधियों के दल से पाला बदलने की घटना का बढ़ना**

इन तीन क्षमताओं और तीन रुझानों का उल्लेख हम ''लक्षणों की सूची'' के रुप में करते हैं। हम मानते हैं कि अगर किसी आंदोलन में यह तीन क्षमताएं और रुझान हों तो उसकी सफलता की संभावना काफ़ी बढ़ जाती है। इस संदर्भ में यह याद रखा जाना चाहिये कि लक्षणों की सूची नतीजे की गारंटी देनेवाला नुस्खा नहीं बल्कि एक रुपरेखा है जो अपनी सोच को व्यवस्थित करने और उसे प्रभावी बनाने में लोगों की मदद करती है।

इस दिशा में, लक्षणों की सूची का एक महत्व संघर्ष के दौरान आ जानेवाली दिग्भ्रम की स्थिति से पार पाना है। जटिलता किसी भी नागरिक प्रतिरोध आंदोलन के सामने आनेवाली सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है और संघर्ष के घटाटोप में यह पहचान पाना कठिन हो सकता है कि निर्णय लेते हुए सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक कौन से हैं। हम मानते हैं कि किसी आंदोलन में लक्षणों की सूची में शामिल तीन क्षमताओं और तीन रुझानों की उपस्थिति की जांच उसकी वर्तमान स्थिति, ताकत, कमजोरियों और सफलता की संभावना के मूल्यांकन का एक मजबूत आधार प्रदान करेगी।

हम लक्षणों की सूची के बारे में विस्तार से बता रहे हैं:

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman

1. लोगों को एकजुट करने की योग्यता

निरंकुश शासक 'फूट डालो और राज करो' की नीति में कुशल होते हैं इसलिये उन्हें चुनौती देनेवालों को एकता बनाने में बहुत कुशल होना चाहिए। एकता की रचना और उसे बनाए रखना बहुमुखी काम है लेकिन नागरिक प्रतिरोध आंदोलन की एक साझा और समावेशी दृष्टि तैयार करना इसका सबसे प्रमुख पक्ष है। समावेशी दृष्टि तैयार कर पाने के लिए आंदोलन के आयोजकों को जनता के उन विभिन्न वर्गों की शिकायतों, आकांक्षाओं, संस्कृति और मूल्यों की गहरी जानकारी होनी ज़रूरी है जिन्हें वे जुटाना चाहते हैं। इस जानकारी के आधार पर ही जनता का व्यापक समर्थन पानेवाली, लोगों को एकजुट कर सकनेवाली दृष्टि विकसित और संप्रेषित हो पाएगी । प्रभावी दृष्टियां आम लोगों के व्यक्तिगत अनुभव और भावनाओं को प्रतिध्वनित करती हैं, और सामूहिक नागरिक प्रतिरोध में उनकी भागीदारी का आह्वान करती हैं।

एकता के निर्माण का एक और महत्वपूर्ण पक्ष, एक वैध नेतृत्व और संगठनात्मक ढांचे की उपस्थिति है। आंदोलनों में भागीदारी स्वैच्छिक है इसलिये एकजुट हो रहे लोगों पर नेताओं का औपचारिक नियंत्रण नहीं रहता। इसका मतलब यह है कि आंदोलन में निर्णय ऐसे तरीकों से लिया जाना चाहिए जिन्हें एकजुट किये जा रहे लोग वैध मानते हों । हर आंदोलन निर्णय लेने का अपना तरीका विकसित करता है-कुछ यह काम वरीयताक्रम के आधार पर करते हैं, कुछ ज़रा अधिक विकेंद्रीकृत ढंग से और कुछ समय के साथ-साथ दोनों तरीकों का संयोजन कर लेते हैं। आंदोलन का नेतृत्व और संगठनात्मक ढांचा जैसा भी हो, आंदोलनों में नेतृत्व के विभिन्न रूप होते हैं। एकता में इन नेतृत्वों के बीच सामंजस्य बैठाना शामिल होता है।

आंदोलन के शीर्ष या करिश्माई राष्ट्रीय नेता के अलावा स्थानीय स्तर के बहुत से नेता होते हैं जिनका विभिन्न समूहों के बीच गठबंधन तैयार करने, बातचीत करने और हितों को बढ़ाने में बहुत कुशल होना ज़रूरी है। देश के विभिन्न हिस्सों से, विभिन्न समूहों का प्रतिनिधित्व करनेवाले, विभिन्न स्तरों (स्थानीय या राष्ट्रीय) पर विभिन्न नेताओं की मिलजुल कर काम करने की योग्यता ही एकता को दीर्घकाल तक बनाए रखती है।

1980 के दशक में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन द्वारा नागरिक प्रतिरोध के उपयोग में हम एकता के इन दोनों पहलुओं के प्रमाण देख सकते हैं। उस दशक में साफ़ पानी और सेवाओं तक पहुंच जैसी नागरिक सुविधाओं के लिए सैकड़ों स्थानीय नागरिक समूह उठ खड़े हुए जो इस के साथ ही रंगभेद को समाप्त करने और राष्ट्रीय स्तर पर सामंजस्य तैयार करने के लिए एक साझा दृष्टि के अंतर्गत एकजुट हो रहे थे। यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के रूप में गठित हुए इन नागरिक समूहों के स्थानीय नेता थे जो स्थानीय मुद्दों के लिए विकेंद्रित रणनीति (जैसे उपभोक्ताओं द्वारा बहिष्कार) का प्रभावी रुप से नेतृत्व करने में सक्षम थे, और साथ ही बड़े संगठनात्मक ढांचों और राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व के साथ संवाद बनाए रखते थे और उनके साथ मिल कर काम करते थे।

2. परिचालन योजना

प्रभावी नागरिक प्रतिरोध को सामान्यतः जैसा समझा जाता है, यह उससे कहीं ज़्यादा जटिल है। जब लोग

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

नागरिक प्रतिरोध के बारे में सोचते हैं तो उनके मन में साधारण रूप से विरोध की छवि उभरती है, लेकिन विरोध तो सैकड़ों रणनीतियों में से केवल एक है। सबसे प्रभावी आंदोलन यह बात समझते हैं कि कौन सी रणनीति चुनी जाए, इसका निष्पादन कब, कहाँ, किसके द्वारा हो, इसका लक्ष्य क्या रहे और यह कौनसी दूसरी रणनीतियों से क्रमबद्ध हो।

इन सवालों का सही जवाब देने के लिए आंदोलन और विरोधी की ताकतों, कमज़ोरियों, अवसरों और खतरों के साथ-साथ संघर्ष के वातावरण के मूल्यांकन और संघर्ष पर प्रभाव डालने में सक्षम तटस्थ या अप्रतिबद्ध पक्षों (अंतरराष्ट्रीय समुदाय सहित) के विस्तार से विश्लेषण के आधार पर योजना बनानी ज़रुरी होती है। इन सूचनाओं से आंदोलन प्रभावशाली लघुअवधि, मध्यमअवधि और दीर्घावधि उद्देश्य और उनकी प्राप्ति के लिए ज़रूरी क्रियात्मक योजनाएं तैयार कर सकते हैं। यह योजनाएं तो खैर जमीनी स्तर पर घट रही घटनाओं की अनुक्रिया में समय के साथ-साथ विकसित होती रहेंगी, लेकिन आंदोलन के भागीदारों के लिये योजना तैयार करने की प्रक्रिया और मानसिकता तैयार करना किसी योजना से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

वैसे किसी संघर्ष में कौशल और स्थितियों का स्पष्टतम संयोग क्रियाशील नियोजन में ही दिखता है। क्रियाशील नियोजन का आधार आंदोलन के सामने आनेवाली अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का आकलन है। इसके बाद आंदोलन अनुकूल परिस्थितियों का फायदा उठाने और कौशल तथा रणनीतिक चुनाव द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों पर काबू पाने, उन्हें बदलने या उन से बच निकलने की योजना बनाता है।

क्रियाशील नियोजन का एक स्पष्ट उदाहरण 1980 के दशक में पोलैंड में सालिडैरिटी आंदोलन में देखने को मिला। अपनी शक्तियों और क्षमताओं को समझते हुए श्रमिकों ने स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों के लिए एक शक्तिशाली और राजनीतिक रुप से यथार्थवादी मांग व्यक्त की (लेकिन खुद को कम्यूनिस्ट शासन को समाप्त करने के तब प्राप्त न हो सकनेवाले लक्ष्य की मांग करने से रोक दिया); अपनी ताकत को मज़दूरों को संगठित करने और प्रतिद्वंदी की आर्थिक कमज़ोरियों और वैधता की कमी के विरूद्ध विभिन्न श्रमिक समूहों को एकजुट करने पर केंद्रित किया; और अपने काम करने की जगहों के बाहर प्रदर्शन करने के बजाय अपने काम करने की जगहों पर कब्ज़ा करने की प्रभावी रणनीति चुनी (पहले जब वे अपने काम करने की जगहों के बाहर प्रदर्शन करते थे तो उनका दमन करना आसान होता था)। इसे वैकल्पिक संस्थाओं-विशेष रुप से उन छापाखानों और स्वतंत्र पत्रिकाओं पर जो पिछले एक दशक में शहरों के बीच संचार सुविधाजनक बनाने के लिये विकसित की गई थीं-पर श्रमिकों की निर्भरता से मदद मिली। एक रणनीतिक उद्देश्य, उपयुक्त लक्ष्य और अपनी क्षमताओं के भीतर उपयुक्त रणनीति (एक व्यवसाय की हड़ताल और वैकल्पिक संस्थानों के उपयोग) को चुन कर सालिडैरिटी आंदोलन प्रभावी ढंग से संघर्ष के माहौल से निपटा, प्रतिकूल परिस्थितियों पर जीत पाई और लोकतांत्रिक पोलैंड के अपने अंतिम लक्ष्य की दिशा में प्रगति की। यह लक्ष्य 1989 में प्राप्त कर लिया गया।[12]

3. अहिंसक अनुशासन

अहिंसक अनुशासन को बनाए रखना-यह प्रतिरोध करनेवालों की भड़काए जाने के बावजूद अहिंसक बने रहने की क्षमता है- नागरिक प्रतिरोध की कार्यात्मक गतिशीलता का मर्म है। अहिंसक अनुशासन के सहारे

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman
आंदोलन नागरिक भागीदारी को अधिकतम बढ़ा लेते हैं, विरोधियों द्वारा दमन की लागत बढ़ा देते हैं, दमन का दांव उलट जाने की संभावनाएं बढ़ा देते हैं और इससे विरोधियों के आधार के प्रमुख स्तंभों से पाला बदलने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। जैसाकि चेनोवैथ और स्टीफ़न का शोध बताता है, यह लाभ हिंसा और नागरिक प्रतिरोध आंदोलनों की सफलता दरों में अंतर को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा देते हैं।[13]

अहिंसक अनुशासन प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि आंदोलनों को इस बात पर विश्वास हो कि नागरिक प्रतिरोध उनके संघर्ष के हल का एक प्रभावी माध्यम है। इस संबंध में, नागरिक प्रतिरोध की कार्यविधि और इसके ऐतिहासिक रिकार्ड के बारे में सूचना के साथ ही समय के साथ और बड़ी जीतें हासिल करनेवाली और नागरिक प्रतिरोध का कारगर होना दिखनेवाली एक प्रभावी रणनीति सहायक हो सकती है। आंदोलन इसे लागू करने में सहायक संस्कृति और मानदंडों का निर्माण करके भी अहिंसक अनुशासन बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, स्लोबोदन मिलोसेविक को बेदखल कर देनेवाले सर्बिया के ओटपोर आंदोलन ने नए सदस्यों को व्यवस्थित रुप से प्रशिक्षित करके उन्हें नागरिक प्रतिरोध की कार्यविधि बताई और यह समझाया कि अहिंसक बने रहने क्यों महत्वपूर्ण है।

इस तरह के प्रयासों को अहिंसक बने रहने के लिये नैतिक तर्क रचने के लिए आंदोलन की आवश्यकता नहीं है; लेकिन लोगों को उन मामलों को याद रखते हुए (सीरिया हाल ही का एक दुखद उदाहरण है) जहाँ अधीरता या नागरिक प्रतिरोध में आत्मविश्वास की कमी के कारण हिंसक रणनीतियां अपनाई गई जिनके विनाशकारी परिणामों का अनुमान लगाना कठिन नहीं था, एकदूसरे को अहिंसक अनुशासन के व्यावहारिक लाभों की याद दिलाते रहना चाहिए।

4. नागरिक प्रतिरोध में नागरिकों की भागीदारी बढ़ाना

नागरिक प्रतिरोध में नागरिकों की भारी भागीदारी निस्संदेह आंदोलन की सफलता का सबसे बड़ा पूर्वसंकेत है।[14] यह समझना कठिन नहीं है क्योंकि जितने ही अधिक लोग किसी निरंकुश व्यवस्था से सहमति और आज्ञाकारिता लौटा लेते हैं, उतनी ही वह कमज़ोर होती जाती है और तब उसे नियंत्रण बनाए रखने की उतनी ही बड़ी कीमत चुकानी होती है। इसके अलावा, हम मानते हैं कि नागरिकों की भागीदारी बढ़ने से दमन का उल्टा ही असर होने की संभावना बढ़ जाती है और परिमाणात्मक साक्ष्य दिखाता है कि नागरिकों की भागीदारी बढ़ने से विरोधी के समर्थकों द्वारा दलबदल की संभावना बढ़ जाती है।[15]

भारी संख्या में नागरिकों की भागीदारी का महत्व दिखाते हुए मिस्र और ट्यूनीशिया में 2011 की क्रांतियों ने जनता के विभिन्न समूहों - पुरूषों और महिलाओं; धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष समूहों; युवा, प्रौढ़ और बूढ़े लोगों; निम्न और मध्यम श्रेणी के श्रमिकों; शहरी और ग्रामीण लोगों का व्यापक समर्थन पाया। इसके विपरीत 1989 में चीन के छात्र आंदोलन और 2009 में ग्रीन मूवमैंट ने लाखों लोगों को एकजुट किया और सुर्खियाँ बटोरीं लेकिन दोनों में से एक भी आंदोलन ने अपने घोषित उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया क्योंकि दोनों ही अपने शुरुआती आधारवर्ग तक ही सीमित रह गए और व्यापक नागरिक भागीदारी नहीं जुटा सके।

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

© 2014 Peter Ackerman and Hardy Merriman
नागरिक प्रतिरोध में जनता की भारी भागीदारी प्राप्त करना लक्षणों की सूची पर पहली तीन शर्तों का ही विस्तार है। एकता तैयार करनेवाली दृष्टि संयुक्ति बनाने और एकजुटता तैयार करने में मदद करती है। **परिचालन** नियोजन आत्मविश्वास देता है और लोगों की विभिन्न जोखिम सहनशीलताओं, उपलब्ध समय और आंदोलन के लिए बलिदान की क्षमताओं को समायोजित करने की रणनीतियाँ प्रदान करता है। प्रभावी रणनीति, गरीबों, धनी, युवा, बूढ़े और सभी वर्ग के लोगों को आंदोलन को समर्थन देने के लिए कुछ छोटे या बड़े योगदान करने के विकल्प देती है। अहिंसक अनुशासन सुनिश्चित करता है कि इसमें सभी भाग ले सकते हैं (सशस्त्र प्रतिरोध में केवल शारीरिक रूप से सक्षम स्त्री-पुरुष ही भाग ले सकते हैं) और अहिंसक साधनों के समाज के व्यापक हिस्सों को आकर्षित करने की अधिक संभावना है।

5. दमन के प्रभाव का लगातार कमज़ोर पड़ते जाना, और दमन का दांव उल्टा पड़ने की घटना का बढ़ते जाना

दमन की क्षमता, निरंकुश शासक के सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक है। प्रभावी आंदोलन दमन के प्रभाव को कम करना और इसकी लागत बढ़ाना सीख लेते हैं । इसका एक तरीका है जोखिम का सटीक मूल्यांकन और विकल्प का रणनीतिक चुनाव, क्योंकि सभी रणनीतियों में दमन का समान जोखिम नहीं होता। बड़े पैमाने पर प्रदर्शनों जैसी केंद्रित कार्यवाहियों के दमन की ज्यादा संभावना रहती है जबकि उपभोक्ताओं द्वारा बहिष्कार, घर बैठो हड़तालों, स्कूल से बीमारी की छुट्टी या सार्वजनिक स्थानों पर छोटे प्रतीकों के गुमनाम प्रदर्शन जैसी विकेंद्रित रणनीतियों का दमन करना किसी सत्ता के लिए बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ रणनीतियों (जैसे उपभोक्ताओं द्वारा बहिष्कार) में प्रतिभागी इतने स्पष्ट नहीं दिखते (आप किसी को देखकर यह नहीं बता सकते हैं कि वे किसी उत्पाद का बहिष्कार कर रहे हैं या नहीं) या क्योंकि दोषी छितरे हुए होते हैं और वे दोषी होने से इन्कार कर सकते हैं (जैसे घर बैठो हड़ताल के मामले में पुलिस को हर मजदूर के घर जाना पड़ेगा और बीमारी की छुट्टी लेनेवाले कह सकते हैं कि वे उस दिन सचमुच बीमार थे)।

1983 में चिली में, अगस्तो पिनोशेत की तानाशाही के विरोधी राजनीतिक असंतुष्टों को अपने दमन को किनारे करने का कोई रास्ता खोजना था। बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियों, हत्याओं, यातना और लोगों के गायब होने के एक दशक से चल रहे सिलसिले के चलते लोग संगठित होने या एकजुट होने से डरते थे। अप्रैल में, तांबे की खान के खनिकों ने सैंटियागो के बाहर हड़ताल का आह्वान किया लेकिन हड़ताल शुरु हो पाने से पहले ही पिनोशेत ने सेना भेज कर खानों को घेर लिया और खूनखराबे की धमकी दी। इस तरह के दमनकारी माहौल में श्रमिक नेताओं ने हड़ताल खत्म कर दी और इसकी जगह राष्ट्रीय विरोध दिवस मनाने की बात कही जिसमें शासन का विरोध करने वाले लोगों को धीरे-धीरे काम करना था, धीरे-धीरे चलना था और धीरे-धीरे वाहन चलाना था और रात के 8 बजे बर्तन-भांडे खनखनाने थे।[16] इन कार्यवाहियों में जनता की अभूतपूर्व और व्यापक भागीदारी रही और इसके बाद हर महीने विरोध प्रदर्शन होने लगे। यह पिनोशेत के शासन की आधारस्वरूप डर और विरोध को चूर-चूर कर देने की नीति का आतंक कम करने की दिशा में पहला बड़ा कदम था। इन कार्यवाहियों में भागीदारों के लिए स्वीकार्य स्तर का कम खतरा था और यह अदम्य थीं-पिनोशेत के सुरक्षाबलों के पास ऐसी व्यापक और विकेंद्रीकृत रणनीति का तोड़ नहीं था।

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

दमन के प्रभाव को कम करने या इसकी लागतों और दांव उल्टा पड़ने की संभावनाओं को बढ़ाने के अन्य पक्षों में कुछ तरह की शिकायतों को अराजनीतिक शब्दावली में व्यक्त करना (प्रदर्शनकारी व्यवस्था के पतन के बजाय स्वच्छ पानी और सुरक्षित पास-पड़ोस की मांग करते हैं), नेतृत्व के उत्तराधिकार की स्पष्ट नीतियों का निर्माण, और एक आंदोलन के प्रतिभागियों और घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय समूहों के बीच सेतु बनाना शामिल है ताकि आंदोलन के दमन का दांव उल्टा पड़ने की संभावना अधिक हो। उदाहरण के लिए, जब भ्रष्टाचार उजागर करने के कारण मिस्त्र के ब्लागर खालेद सईद को 2010 में सुरक्षा बलों ने एक इंटरनैट कैफ़े से बाहर निकाल कर पीट-पीट कर मार दिया, तब असंतुष्ट फेसबुक ग्रुप ''वी आर आल खालिद सईद'' ने खालिद के जीवन को अवमानित करने के मिस्त्र की सरकार के प्रयासों का मुकाबला करने की कोशिश की। अपनी उपस्थिति से उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि सईद और आम मिस्त्री लोगों में बहुत सी बातें साझा हैं, इस तरह उन्होंने दमन के असर को उलट दिया।

6. आंदोलन के विरोधियों द्वारा दलबदल का बढ़ना

समय के साथ-साथ नागरिक प्रतिरोध आगे बढ़ता है तो अक्सर यह विरोधी पक्ष के सक्रिय और निष्क्रिय समर्थकों के बीच दलबदल को प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, सरकार में मौजूद सुधारवादी और कट्टरपंथी नियंत्रण के लिए सार्वजनिक रुप से एक -दूसरे के खिलाफ संघर्ष कर सकते हैं। आर्थिक हित, राज्य पर किसी आंदोलन की मांगों को समायोजित करने के लिए दबाव बना सकते हैं ताकि वाणिज्य-व्यापार पटरी पर लौट आए। सैनिक, पुलिस, नौकरशाह और शासन के दूसरे कारिंदे अनेक कारणों से निष्ठा बदल सकते हैं-उन्हें आंदोलन की मांगों में औचित्य दिखता है, कि उन्हें शासन से घृणा हो गई है या उनके परिवार के सदस्य्र और दोस्त नागरिक प्रतिरोध में भाग ले रहे हैं। यहाँ तक कि शासन के प्रति सहानुभूति रखनेवाला अभिजात वर्ग भी उसके टिके रह पाने पर संदेह करना शुरु कर सकता है और इसलिये तटस्थ हो सकता है ताकि नागरिक प्रतिरोध के सफल होने की स्थिति में उसे गलत पक्ष का साथ देने का दोषी न ठहराया जाए।

2004 में यूक्रेन की आरेंज क्रांति में, असंतुष्टों ने जानबूझकर सुरक्षा बलों के साथ सेना के सेवानिवृत्त अधिकारियों के दल के माध्यम से संवाद की व्यवस्था की मांग की।[17] समय बीतने के साथ-साथ विपक्ष ने अपने कार्यों से सिद्ध किया कि वे अहिंसक और सही हैं। उन्होंने सेना का आह्वान किया कि वह जनता की मदद और सार्वजनिक हित की सुरक्षा करे; मेलमिलाप, नारों और कार्यों (जैसेकि दंगा पुलिस को गुलाब देना) से सामाजिक दूरी को पाटा; वर्तमान शासन के भ्रष्टाचार का खुलासा किया; और आखिरकार सुरक्षा बलों के बीच वफादारी के बदलावों को भड़का दिया। जनता के दमन में शामिल होने का समय आया तो कई यूक्रेनी सैनिक और पुलिस के सिपाही तटस्थ हो गए। मिलोसेविक के ज़माने में बिलकुल ऐसा ही सर्बिया में भी हुआ। खुल कर पाला बदलने के बजाय सुरक्षा बलों ने शासन के आदेशों का उत्साहपूर्वक पालन करना बंद कर दिया। 5 अक्टूबर के आटपोर आंदोलन के चरम पर, बेलग्रेड में भीड़ पर हैलीकाप्टर से रासायनिक छिड़काव करने के लिए ज़िम्मेदार पुलिस अफसर ने यह कहते हुए ऐसा करने से मना कर दिया कि वह ठीक से भीड़ को देख नहीं पा रहा क्योंकि मौसम साफ नहीं था, हालांकि उस दिन धूप निकली हुई थी। बाद में उसने कहा कि उसे लगा कि वह इस आदेश का पालन नहीं कर सकता क्योंकि हो सकता था कि उसके परिवार के सदस्य्र भी उन आंदोलनकारियों में शामिल हों।[18]

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

दलबदल समझाए जाने का परिणाम हों या अपने हितों को ध्यान में रखते हुए किये गए हों लेकिन यह अक्सर नागरिक प्रतिरोध आंदोलन द्वारा उत्प्रेरित दीर्घावधि प्रक्रियाओं का परिणाम होते हैं। लक्षणों की सूची के पिछले दो रूझानों की ही तरह यह रूझान भी आंदोलन के एकता, योजना और अहिंसक अनुशासन को साकार करने से उभरते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि जनता के विविध वर्गों की भारी भागीदारी का सहसंबंध पाला बदलने की संभावना के बढ़ने से है और एकता, योजना और अहिंसक अनुशासन सभी व्यापक और विविध भागीदारी को बढ़ाते हैं। दलबदल को प्रेरित करने के लिए अहिंसात्मक अनुशासन विशेष रुप से महत्वपूर्ण है। जबतक आंदोलन अहिंसक बना रहता है और हिंसक विद्रोह में बदलने से बचा रहता है (जैसाकि 2011 में सीरिया का दुःखद मामला था) तबतक वह और लड़ने के लिए ज़िंदा रह सकता है और दलबदल की संभावना को बनाए रखता है। अगर शासन के भीतर मौजूद निष्ठा के बदलावों के लक्ष्यों को हिंसक विद्रोह से जान का खतरा न हो जाए तो उनके पाला बदल लेने की संभावना निरंकुश सत्ता की शक्ति संरचना के एकीकरण के लिए एक सतत खतरा बनी रहती है।

आंदोलनकारियों से इतर घटकों के लिये निहितार्थ

लक्षणों की यह सूची केवल असंतुष्टों के लिए ही उपयोगी मार्गदर्शन नहीं है। दूसरे घटक भी इन संघर्षों से संबंधित अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए इसे लागू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, लक्षणों की सूची नागरिक प्रतिरोध के बारे में अधिक समझदारी से लिखने में पत्रकारों की मदद कर सकती है। अगर पत्रकार किसी संघर्ष की पैनी समझ तैयार करना चाहें तो लक्षणों की सूची संकेत देगी कि 2014 की शुरुआत में, कीव में एक मोलोटोव काकटेल के जलते लक्ष्य के सामने एक रिपोर्टर को इसलिये लगाया जाना ताकि वह अंदाज़ा लगा सके कि क्या हिंसा और बदतर होगी, संघर्ष में निहित प्रेरक शक्तियों को उजागर नहीं करता। लेकिन किसी आंदोलन की एकता और योजना की स्थिति, अहिंसक अनुशासन के ध्वस्त होने के कारणों, नागरिक भागीदारी में वृद्धि, आंदोलन पर दमन के प्रभाव का कम होते जाना, और सुरक्षा बल दलबदल न भी कर रहें तो क्या वे पूरी तरह से आदेशों का पालन कर रहे हैं जैसे बिंदुओं की पड़ताल नवीनतम विश्लेषण प्रदान करेगी। इस में व्यवसायी समुदाय के बीच समर्थन खो देने की समझ भी जोड़ें तो स्पष्ट हो जाएगा कि इस 21 फरवरी को शासन द्वारा संचालित सबसे भयानक हिंसा का दांव उल्टा पड़ने पर यूक्रेनी राष्ट्रपति यानुकोविच क्यों भाग गए थे। अगर कोई सही संकेतकों पर पहले से निगाह रखे हो तो इस तरह की घटनाओं का अनुमान और अच्छी तरह लगाया जा सकता है।

अगर नीति निर्माताओं ने 2011 के उत्तरार्ध में इस पर विचार किया होता तो लक्षणों की सूची ने सीरिया में असद शासन के खिलाफ नागरिक प्रतिरोध की जीत के अधिक अच्छे संकेत दिये होते। सुन्नी सैनिकों के अलावा भी सेना द्वारा लगातार निष्ठा बदलने को जीत की सबसे अच्छी आशा के रुप में देखा जाता। व्यापारी समुदाय के सदस्यों द्वारा समर्थन वापस लेना एक और सूचक था। इस के मद्देनज़र 2012 के शुरु के महीनों में असद की बची-खुची अलवाइट सेना से लड़ने के लिए मुक्त सीरियाई सेना के प्रोत्साहन को बाकायदा त्रासदी के पूर्वसंकेत के रूप में नहीं तो कम से कम एक नुक्सान करनेवाले कदम के रुप में देखा गया होता।

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

लक्षणों की सूची देशी जनशक्ति आंदोलनों के लिए बाहरी सहायता को संचालित करने वाले मानदंडों के विकास में विशेष रुप से उपयोगी हो सकती है। उदाहरण के लिए, लक्षणों की सूची पर पहली तीन क्षमताएं कौशल-आधारित हैं और जानकारी के मजबूत आदान-प्रदान से इन्हे आगे बढ़ाया जा सकता है। मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के अनुच्छेद 19 के तहत, तानाशाह अपने देश की सीमाओं के अंदर सूचनाओं का प्रवाह सीमित नहीं कर सकते या उन सूचनाओं को असंतुष्टों को फिर से भेजनेवाले नागरिकों को दंडित नहीं कर सकते। लक्षणों की सूची के सभी छह बिंदु तीन क्षमताओं और तीन रूझानों को पोसने में सहायक तकनीकी खोजों के लिए नए रास्ते ढूंढने के विचार को भी प्रेरित कर सकते हैं।

लक्षणों की सूची और हमारे भविष्य को आकार देनेवाले संघर्ष

अहिंसक संघर्ष जटिल वातावरणों में चलते हैं और नागरिक प्रतिरोध के कार्यकर्ता -जिन्हें जीतने की रणनीति बनाने के लिये कई युक्तियों का क्रम नियत करने के लिये ज़मीनी स्तर पर समन्वय की ज़रुरत होती है- कभी-कभी दिशाभ्रम का अनुभव करने लगते हैं। लोगों के जीवनों और दांव पर लगी स्वतंत्रता के बारे में गलत फैसले कर बैठने को लेकर उनका सहज भय तानाशाह की मनचाही निष्क्रियता को प्रेरित कर सकता है और ऐसा भ्रम भी बढ़ा सकता है कि तानाशाह दुर्दम्य है।

भटकाव के इस भाव से निकलने और आगे बढ़ने में लक्षणों की सूची असंतुष्टों की मदद कर सकती है। कुछ लोग कह सकते हैं कि लक्षणों की सूची में चर घटक ज़्यादा ही हैं, इसलिये अत्याचारी व्यवस्था को खत्म करने के लिए यह कुछ ज़्यादा ही सरल है और भविष्य के संघर्षों के दौरान महत्वपूर्ण निर्णय लेने के आकलन के लिए उस समय और स्थान के अनूठे कारकों पर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

बहरहाल, लक्षणों की सूची किसी स्थिति में विशिष्ट कारकों को नज़रअंदाज़ करने की नहीं बल्कि उन कारकों को उस अधिक व्यापक सामरिक रुपरेखा के संदर्भ में समझने की मांग करती है जो बताती है कि नागरिक प्रतिरोध आंदोलन कैसे और क्यों जीत सकते हैं। अतुल गवांडे, जिन्होंने कई अन्य संदर्भों में लक्षणों की सूची के महत्व पर शोध किया है, लिखते हैं:

लक्षणों की सूचियां अनुभवी लोगों को भी हमारी कल्पना से कहीं अधिक कामों में विफल होने से बचा सकती हैं। वे एक तरह से समझदारी के लिये ढांचा रचती हैं। वे हम सभी में अंतर्निहित मानसिक दोषों-स्मृति और ध्यान और संपूर्णता की खामियाँ- को पकड़ लेती हैं....... [19]

सचमुच ही जटिल स्थितियों में - जहाँ किसी एक व्यक्ति के ज्ञान से बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता होती है और अननुमेयता हावी रहती है.....(प्रभावी लक्षणों की सूचियां) सुनिश्चित करती हैं कि मूर्खताभरी लेकिन महत्वपूर्ण चीज़ें अनदेखी न रह जाएं, और ......लोग बातचीत करते रहें और एक-दूसरे के साथ समन्वय बनाएं ......जितनी सर्वश्रेष्ठ बारीकियाँ और जितनी अप्रत्याशितताएं वे जानते हैं, उनका प्रबंधन करें।[20]

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

लक्षणों की सूची भले ही इस बात का अंतिम सूचक नहीं है कि तानाशाह या नागरिक प्रतिरोध आंदोलनकारियों में से कौन जीतेगा लेकिन यह संकेतकों के उस अत्यंत महत्वपूर्ण और सतत समूह के तौर पर काम दे सकती है जो आजादी की नागरिकों की मांग के जमीजमाई निरंकुश शासनव्यवस्था पर विजय पाने को समझने में मदद देता है।

टिप्पणियाँ

1. एरिका चेनोवेथ और मारिया स्टीफ़ान के शोध के आधार पर, जिन्होंने 1900-2006 के बीच दुनिया भर के देशों और क्षेत्रों में, सरकार की बदलाव की मांग करने वाले 105 नागरिक प्रतिरोध अभियानों की पहचान की है।
चेनोवेथ, एरिका और मारिया स्टीफ़न । 2011 व्हाय सिविल रैज़िस्टैंस वर्क्स : द स्ट्रैटेजिक लाजिक आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट। न्यूयार्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रैस। पृ. 6

नैवको 1.1 आंकड़े देखें :
http://www.du.edu/korbel/sie/research/chenow_navco_data.html

2. अध्ययन हाउ फ्रीडम इज़ वन: फ्राम सिविक रैज़िस्टैंस टु ड्यूरेबल डैमाक्रैसी में 1972-2005 के बीच लोकतंत्र की ओर 67 संक्रमणों के विश्लेषण के आधार पर। लेखकों ने पाया कि:
"व्यवस्था के 67 बदलावों में से 50 में या 70 प्रतिशत से अधिक देशों में जहाँ व्यवस्था का बदलाव तानाशाही व्यवस्था के पतन और/या बहुराष्ट्रीय राज्य के विघटन से नए राज्य सामने आने पर शुरू हुआ, नागरिक प्रतिरोध की ताकत व्यवस्था के बदलाव को संचालित करने में एक प्रमुख कारक थी। नागरिक प्रतिरोध जहाँ एक महत्वपूर्ण रणनीति था उन 50 देशों में (यानि उन देशों में जहाँ व्यवस्था के बदलाव नागरिक शक्तियों द्वारा संचालित थे या उन देशों में जहां व्यवस्था में बदलाव के संचालन में नागरिक शक्तियों के साथ ही सत्ताधारियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा), कोई भी स्वतंत्र देश नहीं था, 25 आंशिक रुप से स्वतंत्र थे और 25 स्वतंत्र देश नहीं थे। आज (2005 में), संक्रमण के बाद इनमें से 32 देश स्वतंत्र हैं, 14 आंशिक रुप से स्वतंत्र हैं और 4 स्वतंत्र नहीं हैं।"

एकरमैन, पीटर और एड्रियन करात्निच्की। 2005 हाउ फ्रीडम इज़ वन: फ्राम सिविक रैज़िस्टैंस टु ड्यूरेबल डैमाक्रैसी । वाशिंगटन, डी सी: फ्रीडम हाउस। पृ. 6-7

3. मर्चांट, इलीनार, एड्रियन करात्निच्की, आर्च पडिंगटन और क्रिस्टोफर वाल्टर। 2008 एनेबलिंग मूवमैंट फार सिविक मूवमैंट्स एंड द डायनैमिक्स आफ़ डैमोक्रैटिक ट्रांज़िशन। फ्रीडम हाउस स्पेशल रिपोर्ट। जुलाई 18 पृ. 1

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

4. उपरोक्त पृ. 1

5. चेनोवेथ, एरिका और मारिया स्टीफ़न। 2011 व्हाय सिविल रैज़िस्टैंस वर्क्स : द स्ट्रैटेजिक लाजिक आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट। न्यूयार्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रैस। पृ. 6

6. उपरोक्त पृ. 9

7. उपरोक्त पृ. 68

8. उपरोक्त पृ. 62

9. चेनोवेथ, एरिका 2014, ट्रेंड्स इन सिविल रैज़िस्टैंस एंड आथारिटेरियन रिसपान्स। द एटलांटिक काउंसिल फ़्यूचर आफ़ अथॉरिटेरियनिज़्म प्राजैक्ट। एप्रिल 15

10. चेनोवेथ, एरिका और मारिया स्टीफ़न। 2011 व्हाय सिविल रैज़िस्टैंस वर्क्स : द स्ट्रैटेजिक लाजिक आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट। न्यूयार्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रैस। पृ. 66

11. थामस सी. शेलिंग 1968, सिविलियन रैज़िस्टैंस एज़ ए नेशनल डिफ़ैंसः नान- वायलैंट ऐक्शन अगेंस्ट एग्रैशन। एडम रॉबर्ट्स द्वारा संपादित ”सम क्वश्चन्स आन डिफ़ैंस” में; हैरिसबर्ग, फिलाडेल्फ़ियाः स्टैकपोल बुक्स पृ. 304

12. एकरमैन, पीटर और जैक ड्यूवाल 2000, ए फ़ोर्स मोर पावरफुलः ए सैंचुरी आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट। लंदनः सेंट मार्टिंस प्रैस/पाल्ग्रेव मैकमिलन पृ. 113-174

13. चेनोवेथ, एरिका और मारिया स्टीफ़न। 2011 व्हाय सिविल रैज़िस्टैंस वर्क्स : द स्ट्रैटेजिक लाजिक आफ़ नानवायलैंट कॅनफ्लिक्ट। न्यूयार्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रैस। पृ. 30-61

14. उपरोक्त पृ. 30-61

15. उपरोक्त पृ. 46-49

16. ए फ़ोर्स मोर पावरफुल। डायरैक्टर स्टीव यार्क। यार्क ज़िमरमैन 2000 फ़िल्म।

17. बिन्नेंदिक, एनिका लाक, और इवान मारोविक 2006, पावर एंड पर्सुएज़नः नानवायलैंट स्ट्रैटेजीज़ टु

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.

इंफ्लुएंस स्टेट सेक्योरिटी फ़ोर्सेज़ इन सर्बिया (2000) एंड यूक्रेन (2004) कम्यूनिस्ट एंड पोस्ट-कम्यूनिस्ट स्टडीज़ 39, नं 3 (सैप्टेंबर) पृ. 411-429

18. नेबोज्सा कोविक का साक्षात्कार, वेक्रेन्ये नोवोस्ती, अक्टूबर 2, 2010

19. गावंडे, अतुल 2009 द चैकलिस्ट मैनिफ़ेस्टोः हाउ टु गैट थिंग्स राइट। न्यू यार्कः पिकाडोर पृ. 47 गावंडे, अतुल 2009

20. उपरोक्त पृ. 79

This chapter appears in: Mathew Burrows and Maria J. Stephan (eds.), Is Authoritarianism Staging a Comeback?, Washington, DC: The Atlantic Council, 2015.